चालीसा का तीसरा रविवार

Caritas INDIA
The Joy of Service...

खीस्तीय बुलाहट अपने भाईयों एवं बहनों के आजीविका के जरुरतों की प्यास को बुझाने के लिए संजीवन जल है।"

तीसरे रविवार के लिए विशेष विषयवस्तु

15 मार्च 2020

पहला पाठः निर्गमन ग्रन्थ 17:3–7
दूसरा पाठः रोमियों के नाम पत्र 5:1–2,5–8
सुसमाचार : योहन 4:5–42

पवित्र खीस्तत्याग की पृष्ठभूमि

आज हम चालीसे के तीसरे सप्ताह में प्रवेश कर चुके हैं। आज की धर्म विधि हमें अपने भाइयों एवं बहनों के आजीविका के जरुरतों की प्यास को बुझाने के लिए संजीवन जल बनने के लिए आमंत्रित करती है।"

आज का पहला पाठ निर्गमन ग्रन्थ से है जहाँ अज्ञात प्रदेश में, इस्राएल के प्यासे लोगों ने मूसा से ईश्वर के विरुद्ध शिकायत की थी। तब मूसा ने असहाय होकर ईश्वर से मदद मांगी। ईश्वर ने मूसा को आज्ञा दी, "लोगों के आगे जाओ ..... मैं तुम्हारे सामने खड़ा रहूंगा।" उसी तरह ईश्वर हमें आगे बढ़ने की आज्ञा दे रहें है कि लोगों को संजीवन जल देने के लिए आगे बढ़े, परमेश्वर हमारे साथ खड़ा रहेगा।

आज का पवित्र सुसमाचार येसु और समारी स्त्री के बीच संवाद के बारे में है। समारी स्त्री का जीवन येसु का सामना करते ही बदल जाता है। इस चालीसे काल में येसु से मुलाकत करने और अपना ध्यान दुख और तकलीफ में घिरे अपने भाइयों एवं बहनों की ओर केन्द्रित कर उनके आजीविका के प्यास को बुझाने में सहायक बन उनकी मदद करने के लिए हमें बुलाये गये हैं।

क्या हम एक न्यायपूर्ण समाज के निमार्ण में योगदान दे रहे है, जहाँ सभी सद्भाव में रह सकें? आइए जैसे हम इस यूखरिस्तीय समाहरोह में भाग ले रहे हैं हम ईश्वर की कृपा के लिए प्रार्थना करे।

धर्मोपदेश

प्रभु येसु खीस्त में प्यारे भाइयों एवं बहनो,

आज हम चालीसे के तीसरे रविवार में प्रवेश कर रहे हैं। आज की धर्म विधि येसु को जीवन जल के रुप में ढुँढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। और येसु खीस्त में हमारा अटूट विश्वास हमें अपने प्रेमी पिता परमेश्वर के नजरों में न्याय परायण बनाता है।

यूनानी दार्शनिक थेल्स ने कहा, "जल प्राथमिक सिध्दान्त है।" हम सभी जानते हैं कि जल सभी जीवित प्राणियों की आवश्यक जरुरतों में से एक है चाहे वह जानवर हो, पौधे हों या इन्सान हो। यह अनुमान है कि पृथ्वी का 72 प्रतिशत हिस्सा पानी में समाया हुआ है, लेकिन 97 प्रतिशत पानी खारा है जो पीने के लिए उपयुक्त नहीं है। जल हवा में वाष्प के रुप में, नदियों और झीलों में हिम खण्डों और ग्लेशियरों में, भूमि में नमी के रुप में यहाँ तक कि हममें और जानवरों में भी मौजूद होता है। अनियोजित पर्यावरण दोहन, शोषण, और जलवायु परिवर्तन के कारण, हमारे ग्रामीण क्षेत्र हजारों शहरों के साथ साथ हमारे शहरी महानगरीय शहरें जैसे चेनैई, मुम्बई, दिल्ली आदि में पानी की इतनी उपलब्धता होते हुए भी पानी की कमी का अनुभव हो रहा है। पाकिस्तान बनाम भारत, भारत बनाम बांग्लादेश और भारतीय राज्यों तमिलनाडु बनाम कर्नाटक के बीच जल बँटवारे पर संघर्ष अक्सर देखा जाता रहा है। बड़ी कम्पनियों ने भी पानी की इस समस्या को अपने व्यावसायीकरण के कारण, इसे बोतलों में बन्द कर बेचे जाने वाली वाणिज्यिक वस्तुओं के रुप में उपभोग कर और भी बदतर बना दिया है।

इस संदर्भ में, आज के पाठों पर मनन चिन्तन बहुत मायने रखता है। पहले पाठ में हम सुनते हैं कि इज़राइल के लोगों ने पानी के लिए ईश्वर के विरुध्द भुनभुनाया परन्तु ईश्वर ने मूसा के अनुरोध पर मीठे पानी से उनकी प्यास बुझाई और दूसरे पाठ में संत पॉलुस ने दोहराया कि येसु खीस्त में हमारे विश्वास ने हमें बचा लिया है। पवित्र सुसमाचार में हमने येसु के साथ समारी महिला की मुलाकात देखी जहाँ येसु कहते हैं कि वह उसे संजीवन जल दे सकते है।

यदि हम सुसमाचार के संदेशों पर ध्यान केन्द्रित करें, तो एक तरफ पायेंगें कि येसु और समारी महिला के बीच मुलाकात, समारी महिला के जीवन में परिवतर्न के चरणों को सामने लाती है, जिसे बातचीत के दौरान येसु को सम्बोधित करने के तरीके को समझा जा सकता है : पहला यहूदी, दूसरा श्रीमान, तीसरा नबी, और अंत में मसीहा।

दूसरी तरफ हम सुसमाचार के दो वाक्याशों पर विचार कर सकते हैं : येसु ने महिला से पूछा, "मुझे पानी दो।" और उसके जवाब के बाद येसु ने कहा कि अगर वह उससे पूछती, तो वह उसे जीवन जल देते। इस सन्देश से हम जो प्राप्त कर सकते है, वह है "जो आपके पास है उसे दो" और आपके पास जो कमी है वह प्रभु पूरा कर देगा या जिस चीज की आपको आवश्यकता है, वह प्रभु पूरा करेगा।" जब हम उदारता से देते है तो ईश्वर हमारे द्वारा अद्भुत कार्य करते हैं। यह सुसमाचार के उस वृतान्त की तरह है जब एक लड़के ने उदारता से अपनी 5 रोटियाँ और 2 मछलियों को भेंट में दी जिसे येसु ने हजारों लागों के भूख की तृप्त किया था।

जैसे हम गहराई से विचार करते हैं हम पाते हैं कि येसु उन पर विश्वास करने वाले को जीवन जल देता है। जो उस पर विश्वास करता है वह उनकी आज्ञायों का पालन करता है। विश्वासी का फल भजनों द्वारा पुष्ठि और वंदित की जाती है – "वह जल की धाराओं द्वारा लगाए गए वृक्ष की तरह है, जो अपने मौसम में अपने फल देता है, और उसके पत्ते नहीं मुर्झाते।" इसका मतलब है कि जल जो येसु देते हैं वह जीवन जल है। बहते पानी में जीवन है अर्थात जो देता है वही जीवन है। निम्नलिखित कथन यह बताने के लिए बहुत उपयुक्त है कि देने वाला जीवित है : गैलीली का सागर और मृत सागर जॉर्डन नदी के श्रोत से पानी प्राप्त करतें हैं लेकिन दोनों में स्पष्ट अन्तर देखा जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि गैलीली के सागर में जीवन है और मृत सागर में कोई जीवन नहीं है। इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कारण यह है कि मृत सागर सबसे निचले स्तर पर है और मृत सागर का पानी का खारापन इतना अधिक है कि इसमें जीवन की कोई संभावना नहीं है। जैसा कि इसके विपरीत, गैलीली के समुद्र के पास एक जल श्रोत है, जिसके माध्यम से इसका पानी समुद्र से बाहर निकलता है, लेकिन मृत सागर के पास अपना पानी जाने के निकास नहीं है। अर्थात जो देता है वह जीता है और जो नहीं देता वह मर चुका है। जीवित जल जीवन को बढ़ावा देता है और इसे बनाए रखता है। जीवन जल के दाता येसु ने ठीक ही कहा, "मैं इसलिए आया हूँ ताकि तुम्हारे पास जीवन हो और बहुतायत में हो"

सुसमाचार के संदेशों पर मनन चिन्तन के बाद हमारी प्रतिक्रया क्या होनी चाहिए? जीने की कला ही देने की कला है। इस दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो इतना गरीब हो और उसके पास देने के लिए कुछ न हो। सभी के पास देने के लिए कुछ है। देना ही जीवन है जैसे एक गिलास पानी हो सकता है, अज्ञात को नमस्कार, अजनबी को मुस्कुराहट, तिरस्कृत से हाथ मिलाना, कुछ समय अकेलेपन के लिए कुछ गुणवता समय गिरे हुए को हाथ देना, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी पिलाना, नंगो को कपड़े, बेघरों को आश्रय इत्यादि। याद कीजिए आखिरी फैसले के दिन पिता ईश्वर कहेंगें, "मैं प्यासा था और आपने मुझे पिलाया, सच में मैं आपको बताता हूँ जैसे आपने इनमें से कम से कम एक ऐसा कार्य किया जो मेरे परिवार के सदस्य हैं तो आपने मेरे लिए ऐसा किया।" इस चालीसा काल में एकाएक दयालुता के कार्य को बढ़ावा दें और येसु के सिखाये रास्ते पर चलने की कोशिश करें। पानी बचाओ और जीवन बचाओ : स्वच्छ पेयजल के हमारे प्राकृतिक श्रोत विभिन्न कारणों से सिकुड़ रहें हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम न केवल वर्तमान समय में, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पानी की जरुरतों का ध्यान रखें। इसलिए हमारा स्पष्ट आह्वान है "पानी बचाओ, जीवन बचाओ।" पानी बचाने का एक सबसे अच्छा तरीका है, पानी बर्बाद नहीं करना, उध्दारण के लिए नहाते समय, कपड़े धोते समय, प्लेट, वाहन, ब्रश, शेविंग करते समय, पौधों को पानी लगाते समय और रिसावों को रोकते हुए, जल निकायों को प्रदूशित नहीं करते हुए पानी का उपयोग करना। हमारे अन्य प्रयास जैसे, जल निकायों को बहाल करना, वृक्षारोपन और वर्शा जल का संचयन करने जैसे तरीके और अधिक कारगर हो सकते हैं।

चलते रहो और बढ़ते रहो : जीवन जल बनो और जीवन को बढ़ावा दो। बहते रहो स्थिर मत रहो। मार्टिन लुथर किंग जुनियर कहते है, अगर तुम उड़ नहीं सकते हो तो दौड़ो, अगर तुम दौड़ नहीं सकते हो तो चलो, अगर तुम चल नहीं सकते हो तो रेंगों और आपको जो भी करना है उसे आगे बढ़ाते रहो।" जो व्यक्ति चलते रहता है, उसके लिए बाधायें, कठिनाइयाँ, पतन, और असफलताएँ, आगे बढ़ने के अवसर होते हैं। जीवित जल की तरह बनें और जीवन को बढ़ावा दें। जो हम कहते हैं और करते हैं वे दुनिया में जीवन को बढ़ावा देने का काम करें।

चालीसा काल ख्रीस्तीय बुलाहट को जीने के लिए अनेक संभावनाओं और अवसरों के साथ अपने भाइयों और बहनो के आजीविका के प्यास को बुझाने के लिए जीवन जल बनने का अवसर

प्रदान करता है। हमारे देश में लाखों लोग हैं जिनके पास स्थायी आजीविका के विकल्प नहीं है। एक ख्रीस्तीय के रुप में हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि लोगों तक अपनी पहुँच बनायें और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए सहयोग करें। चालीसे के इस अवसर पर हम संकल्प करें कि अपनी क्षमता के अनुरुप हम अपने जरुरतमंद भाइयों एवं बहनों की मदद करें और उनके लिए जीवन जल बने जिससे कि उनके आजीविका को सबल बना सकें।

विश्वासियों की प्रार्थना

अनुश्ठानकर्ता – ईश्वर की दया की कोई सीमा नहीं है। उनका प्यार किसी की हैसियत, वर्ग या जाति के लिए नहीं बल्कि सबके लिए है। हम उस ईश्वर की महिमा करें जिसके दया की कोई सीमा नहीं नहीं है। हम प्रार्थना करें और कहें

जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !!

1. संत पिता फ्रान्सिस, सभी विशप गण, पुरोहित, याजक और कलीसिया के सभी नेताओं के लिए प्रार्थना करें जिससे कि वे लोगों के प्रति उतरदायी बनें और अपने प्रेरितिक कार्यों के माध्यम से प्यासे लोगों को जल दे सकें जैसे मूसा ने ईश्वर के कृपा द्वारा इस्राइलियों को मरुभूमि में पानी पिलाया था। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

   जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !

2. हम अपने देश के सभी नेताओं के लिए प्रार्थना करतें हैं कि वे ईमानदारी से लोगों के जरुरतों को पूरा करने के लिए सक्रिय कदम उठायें। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

   जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !

3. जिस तरह प्रभु येसु ने धीरे धीरे समारी महिला को उध्दार की और अग्रसर किया वैसे ही बीमार और जरुरतमंदो को उनकी आजीविका को सतत बनाये रखने में मदद मिले।

जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !

4. गरीबों, बेघरों, पीड़ितों और बेरोजगारों के लिए और उन सभी के लिए जो उत्पीड़न के अधीन हैं, उनकी पीड़ा और रोना हमारी उदासीनताओं से अनसुनी न हो बल्कि उन्हें भाईचारा, प्रेम और सहायता प्राप्त हो। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !

5. हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्वक उपयोग कर अपना जीवन निर्वाह कर सकें, हमें संसारिक वस्तुओं के लिए अपने लालच पर लगाम लगाना सिखाएँ जिससे कि दूसरे के आवश्यकताओं की चिंता कर सकें। इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें।

जवाब : हे ईश्वर हमें जीवनदायी जल बनने में मदद कर !

अनुश्ठानकर्ता – हे स्वर्गीय पिता आपने हमें अपनी छवि और समानता में बनाया है और हमें रहने के लिए एक सुन्दर दुनिया दी है। हमें एकता में मजबूत कर ताकि हम सभी आपके राज्य निमार्ण के लिए नए सिरे से विश्वास के साथ काम कर सकें। हम यह प्रार्थना करते हैं उन्हीं हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन!

(सौजन्यः फादर जॉन ब्रिटो, कार्यकारी निदेशक, दिल्ली रिजनल फोरम)

उपवास, अर्थात, दूसरों और सृष्टि के सभी लोगों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलना सीखना, हमारी व्यर्थता को संतुष्ट करने के लिए सब कुछ "भक्षण" से दूर हो जाना और प्यार के लिए पीड़ित होने के लिए तैयार होना, जो हमारे दिलों के खालीपन को भर सकता है।

प्रार्थना, जो हमें मूर्तिपूजा और हमारे अहंकार की आत्मनिर्भरता को त्यागना और प्रभु और उसकी दया की हमारी आवश्यकता को स्वीकार करना सिखाती है।

दान, जिससे हम भ्रम में खुद के लिए सब कुछ जमा करने के पागलपन से बच जाते है कि हम एक भविष्य को सुरक्षित कर सकते है।

आइए हम अपने स्वार्थ और आत्म–अवशोषण को पीछे छोड. दें और यीशु के पास जाएं। आइए हम अपने भाइयों और बहनों की ज़रुरत के मुताबिक खड़े हों, हमारे आध्यात्मिक और भौतिक वस्तुओं को उनके साथ साझा करें।

संत पिता फ्रांसिस
का चालीसा संदेश 2019

Caritas® INDIA
The Joy of Service...

Campaign Against Hunger & Disease | 2020

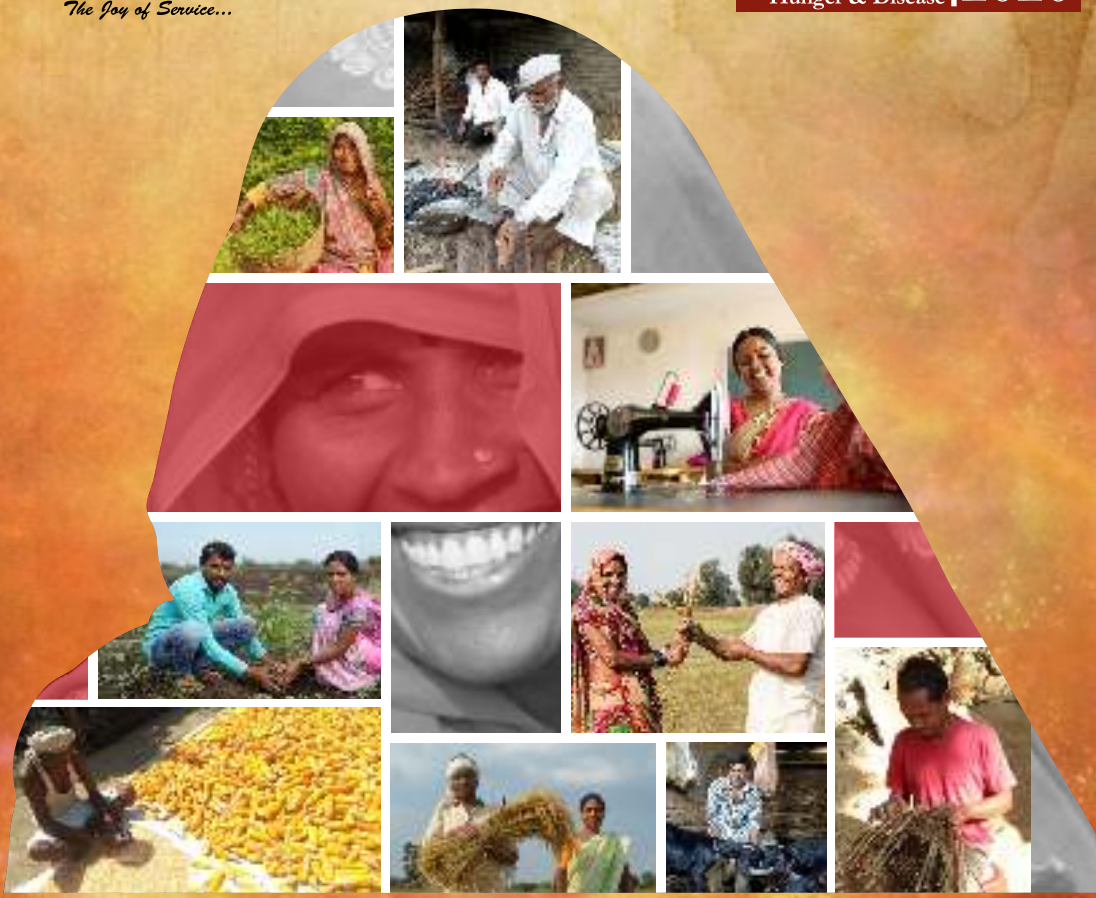

Sustain | Sustainable
Life | Livelihood
समृद्ध जीवनः सतत आजीविका

करीतास इण्डिया अपने वार्षिक चालीसा कालीन अभियान के तहत "**समृद्ध जीवनः सतत आजीविका**" के विषयवस्तु पर सभी को साथ आने के लिए आमंत्रित करती है कि वे एक उत्प्रेरक के रुप में प्रत्येक जन एक जन की मदद के दृष्टिकोण से लोगों तक अपनी पहुँच बनाकर" "**सतत आजीविका**" के लिए परिवर्तन का एक जरिया बने।

इस चालीसा काल में आइए हम संकल्प करें कि जीवन की निरंतरता के लिए आर्थिक और गैर आर्थिक रुप से अपना योगदान दें। इसका मतलब यह नहीं कि हम गरीबी उन्मूलन के लिए काम करें बल्कि लोगों में क्षमता वृध्दि करें जिससे कि वे जीवन में आने वाले बाधाओं / रुकावटों का सामना कर सकें। इसका मतलब यह भी है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग स्थायी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करना शुरु करें जिससे कि कार्बन उर्त्सजन को कम कर सकें। इसके लिए हम पर्यावरण के अनुकूल यात्रा के तरीके, बेकार के उत्पाद का पुनःचक्रित और समुदाय को सक्षम बनाने की पहल को बढ़ावा दे सकते हैं।